तैयारी से बेअसर करें दूसरी लहर

के.के. तलवार

मौजूदा कोविड-19 महामारी के आरंभिक चरण में वायरस के फैलाव को सीमित करने में पंजाब ने काफी बढ़िया काम कर दिखाया था। कड़े लॉकडाउन उपाय लागू किए गए थे और इस अवधि का इस्तेमाल टेस्ट संख्या की क्षमता में इजाफा करने और स्वास्थ्य सेवा ढांचे को सुदृढ़ करने के लिए किया गया। पूरे इलाके को सील करने की बजाय चंद घरों की नाकेबंदी वाली 'माइक्रो-कंटेनमेंट' जुगत पहली बार पंजाब ने लगाई और राष्ट्रीय स्तर पर इसकी प्रशंसा हुई थी।

लेकिन लॉकडाउन में ढील और बाहरी राज्यों से लोगों की आमद बढ़ने की वजह से सूबे के शहरों, खासकर सघन आबादी वाले इलाके और कालोनियों में कोरोना के मामलों में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। लगता है लोगों में स्वेच्छा से सावधानी बरतने वाले उपाय जैसे कि मास्क पहनने और आपसी दूरी बनाए रखने की इच्छाशक्ति कम हो गई है। भ्रामक सूचनाएं फैलने की वजह से टेस्ट करवाने में लोग-बाग कतराने लगे, जिसने वायरस के संपर्क में आए लोगों की पहचान और रोकथाम को कमजोर किया है। इससे इलाज के लिए समय पर संक्रमित रोगी की पहचान-इलाज-संक्रमण कड़ी के नियंत्रण पर प्रभाव पड़ता है।

हालांकि प्रशासन के प्रयासों से लोगों में भरोसा जगा और धीरे-धीरे ज्यादा लोग टेस्ट करवाने के लिए खुद आगे आने लगे, साथ ही अपने संपर्क में आए लोगों की पहचान करवाने में सहयोग देने लगे थे। सही समय पर सटीक परीक्षण, ऑक्सीजेनेशन कौनुला और पल्स स्टिरॉयड थेरेपी ने कोरोना से गंभीर अवस्था में पंहुचे रोगियों को बचाने और उफान की रोकथाम में काफी अहम भूमिका निभाई है, नतीजतन मौतों की संख्या कम रही है।

अब कोविड-19 के मामलों में कमी आने लगी है और यह सकारात्मक चाल अभी जारी रहेगी। हालांकि रोजमर्रा के कामों के सिलसिले में जिस तरह आए दिन नियंत्रणों से ज्यादा छूट देनी पड़ रही है, आगामी त्योहारी मौसम के चलते कोविड-19 की दूसरी लहर बनने का डर है। माहिरों की वैज्ञानिक भविष्यवाणी को मानें तो अगले 6 से 8 हफ्तों में कोरोना की दूसरी लहर आने के संकेत हैं। कुछ देशों में पहले ही कोविड-19 संक्रमण की दूसरी लहर शुरू हो चुकी है। हालिया अनुभवों से हमें सीख लेनी होगी ताकि बेहतर परिणाम सुनिश्चित कर पाएं। हालांकि सरकार और जनता दोनों को मिलकर वे तमाम प्रयास करने होंगे, जिससे कि वायरस का फैलाव कम-से-कम रखा जा सके।

सर्वप्रथम हमें रोकथाम में मास्क की महती उपयोगिता का भान होना बहुत जरूरी है। जापान, थाइलैंड और चेक गणराज्य जैसे देशों ने बड़े पैमाने पर मास्क पहनने में अच्छा कर दिखाया है और परिणाम बहुत कारगर रहे हैं। कोविड-19 की रोकथाम में मास्क पहनने से ज्यादा सरल और सस्ता दूसरा कोई क्रियान्वयन उपाय नहीं है। कई संगठन उन लोगों को मुफ्त में मास्क बांट रहे हैं जो इन्हें खरीदने में असमर्थ हैं। अगर हम सब लोगों ने जरूरी एहतियात नहीं बरती तो त्योहारों में बढ़ने वाली सामाजिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप दूसरी कोरोना लहर बन सकती है। मास्क न केवल पहनने वाले को सुरक्षा प्रदान करता है बल्कि वायरस का फैलाव अन्य लोगों तक सीमित करने में सहायक है। मास्क का इस्तेमाल दूसरों को सुरक्षित रखने से अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

जिन लोगों को कुछ बीमारियां पहले से हैं, उनकी पहुंच जनस्वास्थ्य सुविधाओं तक बनाने की जरूरत ज्यादा है। सरकारी अस्पताल और निजी स्वास्थ्य सुविधाओं को लोगों में भरोसा पैदा करना होगा। इस मंतव्य की पूर्ति हेतु राज्यों को चल-चिकित्सालय जैसे उपाय अपनाने होंगे। इससे रोगियों का यथेष्ठ और सही समय पर इलाज होने से न केवल कोविड-पॉजिटिव मामलों में बेहतर परिणाम मिलेंगे बल्कि बाकी अन्य बीमारियों से ग्रस्त लोगों को वायरस की चपेट में आने से बचाया जा सकता है। इससे मृत्यु-दर में अवश्य ही कमी आएगी।

एक अन्य महत्वपूर्ण सबक सीखने को यह है कि अगर उक्त रोगियों का इलाज प्रभावशाली ढंग से करना है तो परीक्षण-जांच आधारित निदान पद्धति को अपनाना होगा। कुछ एंटीवायरल दवाएं या स्टिरॉयड का अतार्किक इस्तेमाल करना दुष्प्रभावी हो सकता है (हालांकि अगर ढंग से इस्तेमाल किया जाए तो यह दवाएं जिंदगी बचाने में सहायक होती हैं)। स्टिरॉयड का इस्तेमाल उन मरीजों पर करने से बचना चाहिए, जिन्हें ऑक्सीजन की जरूरत नहीं पड़ती। सार्स-मर्क-इंफ्लुएंजा के रोगियों में वायरस से निजात पाने में देरी उन मामलों में पाई गई है जहां इलाज के दौरान रोगी को जरूरत बनने से पहले ही स्टिरॉयड दे दिए हों। इसलिए अन्य मामलों में उपयोगी सिद्ध होने वाली इन दवाओं का बिना सोचे-समझे प्रयोग रोगी को उलटा हानि पंहुचा सकता है। कोविड-19 में अन्य महत्वपूर्ण जीवनरक्षक अवयव है हाईपॉक्सिया (सांस लेने में कठिनाई) का इलाज। जाने-माने मेडिकल संस्थानों और अस्पतालों का अनुभव बताता है कि रोगी के मुख पर मास्क रूपी खोल लगाकर या फिर नथुनों से सटे कौनुला के माध्यम से या किसी अन्य बाहरी उपायों से दी जाने वाली ऑक्सीजन और पेट के बल लिटाना ज्यादा कारगर सिद्ध हुआ है। गले की श्वास नली के अंदर ट्यूब घुसाकर आक्सीजन देना (वेंटिलेटर) जैसे उपाय को तब तक अमल में न लाया जाए जब तक कि तमाम बाहरी उपाय असफल न हो जाएं। जरूरत बनने से पहले ही श्वास नली के अंदर पाइप का प्रयोग उलटे नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए जब तक कोविड-19 की कोई कारगर वैक्सीन या निदान की दवा नहीं आ जाती तब तक परीक्षण-जांच आधारित यथेष्ट उपचार प्रणाली अपनाकर बेहतर नतीजे पाए जा सकते हैं।

जिस एक जांच प्रक्रिया का इस महामारी में काफी दुरुपयोग हो रहा है, वह है सीटी स्कैन। बिना कोविड-19 टेस्ट करवाए या बगैर लक्षणों वाले लोगों को भी सीटी स्कैन करवाने की सलाह दी जा रही है। सीटी स्कैन की उपयोगिता उन मामलों में है जहां किसी को सांस लेने में कठिनाई लगातार बढ़ती जाए। गैर जरूरी और बेबात किए जाने वाले टेस्टों से लोगों का विश्वास मेडिकल एवं स्वास्थ्य व्यवसायियों से उठ जाएगा, क्योंकि पहले से धन की कमी झेल रहे लोगों के कीमती स्रोतों का ह्रास होता है। विशेषज्ञों को सरकारी एवं निजी स्वास्थ्य सेवा सहयोगियों को यह सलाह और मार्गदर्शन देना चाहिए कि वे जांच-परीक्षण आधारित इलाज पद्धति का पालन करें ताकि मरीजों को यथासंभव सर्वोत्तम इलाज मिल सके।

सुष्मिता सेन बॉयफ्रेंड से कर रही हैं शादी ?

सुष्मिता सेन और उनके बॉयफ्रेंड रोहमन शॉल सोशल मीडिया पर एक-दूसरे के लिए अक्सर प्यार जताते रहते हैं। सुष्मिता इंस्टाग्राम पर भी रोहमन और अपनी बेटियों के साथ तस्वीरें और वीडियोज पोस्ट करती रहती हैं। सुश रीसेंटली इंस्टा पर लाइव थीं। इस दौरान उनके बॉयफ्रेंड भी साथ थे। इस दौरान कुछ मजेदार बातें हुईं।

सुष्मिता ने फैन्स को रोहमन से इंट्रोड्यूस करवाया और कहा, मेरे साथ ये हैंडसम मैन भी है। उनके फैन्स कॉमेंट सेक्शन में खूब प्यार बरसा रहे थे। इसी बीच एक फॉलोअर ने पूछा, आप लोग शादी कर रहे हैं? इस पर सुष्मिता मुस्कुराने लगीं। उन्होंने ये सवाल रोहमन की तरफ बढ़ा दिया। इस पर रोहमन ने जवाब दिया, पूछकर बताते हैं। इस पर सुष्मिता हंसती हैं कि पड़ोसी से पूछकर बताते हैं। बातों-बातों में रोहमन ने बताया कि उनके बाल जबरदस्ती काटे गए हैं।

रोहमन और सुष्मिता की उम्र में करीब 15 साल का फर्क है। रोहमन उनसे 15 साल छोटे हैं। सुष्मिता एक इंटरव्यू के दौरान बता चुकी हैं कि पहले रोहमन उनसे उम्र छिपाते थे। सुष्मिता और रोहमन के बीच जान-पहचान सोशल मीडिया मेसेज के जरिये हुई थी। रोहमन ने एक फैन के तौर पर सुष्मिता को मेसेज किया था। उनका जवाब आने पर रोहमन बहुत खुश हुए थे। रोहमन अब सुष्मिता के साथ रह रहे हैं और दोनों के बीच काफी अच्छी बॉन्डिंग है।

सू- दोकू क्र.082

	3		7				2	1
2				9		4		
	7		1				5	
		1		5		2		7
	5				4			
		4		1		8		5
					1			
1		5		3		9		
	2		6		5		1	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.81 का हल

8	9	5	1	6	3	2	4	7
3	2	1	9	7	4	8	6	5
4	7	6	2	5	8	3	9	1
7	6	9	5	2	1	4	3	8
1	8	3	4	9	7	6	5	2
2	5	4	8	3	6	1	7	9
5	3	8	7	4	2	9	1	6
6	1	7	3	8	9	5	2	4
9	4	2	6	1	5	7	8	3

संवादहीनता का संकट

संपादकीय

इसमें दो राय नहीं कि कृषि सुधारों को लागू करने से पहले किसानों को भरोसे में लेने तथा देशव्यापी विमर्श के लिये जो पहल केंद्र सरकार की तरफ से की जानी थी, वह नजर नहीं आयी। इसके बावजूद पंजाब के किसान संगठनों को दिल्ली आमंत्रित करना और उनसे वार्ता के दौरान किसी मंत्री का उपस्थित न होना, सरकार की संवेदनशीलता पर प्रश्नवाचक चिन्ह ही लगाता है। इसे अपनी उपेक्षा मानकर किसान प्रतिनिधियों का आक्रोशित होना स्वाभाविक ही था। उन्होंने वार्ता से बाहर आकर विरोध भी जताया और सुधार प्रारूप की प्रतियां स्वाह भी की। यही वजह है कि केंद्रीय कृषि सचिव और पंजाब के किसान संगठनों के प्रतिनिधियों की बातचीत अनुत्पादक ही रही। इस प्रकरण ने किसानों से संवाद की संभावनाओं को ही खत्म किया है। किसान प्रतिनिधि उम्मीद कर रहे थे कि कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर उनके गिले-शिकवे सुनेंगे और उनकी आशंकाओं को दूर करने का प्रयास करेंगे लेकिन विडंबना यही है कि इस बातचीत में केंद्र सरकार गंभीर नजर नहीं आई। केंद्र सरकार का यही रूखापन किसानों को आक्रोशित कर गया और उन्होंने हाल ही में लागू किये गये तीन कृषि सुधार कानूनों के खिलाफ आंदोलन को तेज करने की चेतावनी दे डाली। किसान प्रतिनिधियों ने यह महसूस किया कि केंद्र सरकार उनकी चिंताओं के प्रति संवदेनहीनता दर्शा रही है। जाहिर-सी बात है कि जब कृषि मंत्रालय ने किसानों को बातचीत के लिये दिल्ली बुलाया था तो वहां कृषि मंत्री की मौजूदगी बनती थी। लेकिन विडंबना ही कही जायेगी कि ऐसा नहीं किया गया, जिससे किसानों का रोष बढ़ना स्वाभाविक ही है। इसके विपरीत पंजाब के किसान संगठनों के जरिये किसानों तक पहुंच बनाने के लिये केंद्र सरकार ने जो आठ आभासी रैलियां की थीं, उसकी जिम्मेदारी आठ केंद्रीय मंत्रियों को सौंपी गई थी, जिसमें केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी भी शामिल थे, जिन्होंने उस दिन संगरूर और बरनाला के किसानों के लिये ऑनलाइन बातचीत का आयोजन किया। उस दिन असंतुष्ट किसान संगठनों के प्रतिनिधि कृषि भवन में सचिव के साथ बैठक में शामिल नहीं हुए।

निस्संदेह सरकार के कृषि सुधार कानूनों में सुधारों के खिलाफ पंजाब में आक्रोश पूरे देश के मुकाबले ज्यादा है। वजह यह भी कि पंजाब व हरियाणा में मंडी व्यवस्था सुचारु रूप से स्थापित है और यहीं सबसे ज्यादा न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ किसानों को मिलता है। इसके बावजूद यह निर्विवाद सत्य है कि केंद्र सरकार नये कृषि सुधार कानूनों के संभावित लाभों के बारे में किसानों को समझाने में विफल रही है। हंगामेदार राजनीतिक विरोध के बीच जल्दबाजी में पारित बिलों को लेकर किसानों में सुधार की मंशा को लेकर तमाम तरह की आशंकाएं पैदा हुई हैं। यह नाराजगी देशव्यापी है, लेकिन जागरूकता और कृषि संस्कृति के सशक्त होने के कारण पंजाब में विरोध के सुर ज्यादा मुखर हैं। किसान संगठन सवाल उठा रहे हैं कि देशव्यापी लॉकडाउन के बीच कृषि सुधार अध्यादेशों का लाने का क्या उद्देश्य था। सरकार ऐसी हड़बड़ी में क्यों है।?विभिन्न मंचों पर इसको लेकर व्यापक विचार-विमर्श की संभावनाओं को सिरे से क्यों खारिज किया गया है, जिसने किसानों में विपक्षी राजनीतिक दलों के विमर्श के अनुरूप शंकाओं को जन्म दिया। इसके बावजूद केंद्र सरकार की ओर से हितधारकों का विश्वास अर्जित करने के लिये गंभीर पहल होती नजर नहीं आ रही है। धीरे-धीरे किसान आंदोलन की दिशा में भटकाव भी आ सकता है। किसान संगठनों के लोग भाजपा नेताओं की घेराबंदी की बात कह रहे हैं। ऐसे में उनके समर्थन में खड़े सतारूढ़ दल के लिये पैदा होने वाली विषम परिस्थितियों से जूझना आसान नहीं होगा। कहने को तो सरकार कृषि को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बताती है, लेकिन समस्या के समाधान में रचनात्मक भूमिका नहीं निभाती। वहीं दूसरी ओर विपक्षी दलों की सक्रियता यह निष्कर्ष न दे कि विरोध के राजनीतिक निहितार्थ?हैं। इससे किसान के वास्तविक लक्ष्यों को हासिल करने के मार्ग में दिक्कतें आ सकती हैं।